

द्वितीयं द्वितीयवारं ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ विहितः विधानतः विशेषेण हितस्तृप्तो वा ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ इत्यारण्य० नै० भा० पंचाधिकत्रिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ३०५ ॥ ॥ ५ ॥  
 वैशंपायन उवाच नशशाकद्वितीयं साप्रत्याख्यातुमर्निदिता ॥ तं वै द्विजातिप्रवरं तदाशापभयान्नृप ॥ १९ ॥ ततस्तामनवद्यां गीं ग्राहयामास स द्विजः ॥ मंत्र  
 ग्रामंतदाराजन्नथर्वशिरसि श्रुतं ॥ २० ॥ तं प्रदाय तुराजेंद्रकुंतिभोजमुवाच ह ॥ उषितोस्मि सुखं राजन कन्यया परितोषितः ॥ २१ ॥ तव गेहेषु विहितः सदा सुप्र  
 तिपूजितः ॥ साधयिष्यामहेतावदित्युक्तांतरधीयत ॥ २२ ॥ स तुराजा द्विजं हृत्वा तत्रैवातर्हि तं तदा ॥ बभूव विस्मया विष्टः पृथांच समपूजयत् ॥ २३ ॥ इति श्रीम  
 हाभारते आरण्यके पर्वणि कुंडलाहरण पर्वणि पृथायामंत्रप्राप्तौ पंचाधिकत्रिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ३०५ ॥ ॥ ५ ॥ वैशंपायन उवाच  
 गते तस्मिन् द्विजश्रेष्ठे कस्मिंश्चित्कारणांतरे ॥ चितयामास साकन्यामंत्रग्रामबलाबलं ॥ १ ॥ अयं वै कीदृशस्तेन मम दत्तो महां मना ॥ मंत्रग्रामो बलंतस्य ज्ञास्ये  
 नातिचिरादिति ॥ २ ॥ एवं संचितयंती सा ददर्श तं यदृच्छया ॥ ब्रीडिता सा भवद्बाला कन्या भावे रजस्वला ॥ ३ ॥ ततो हर्म्यं तलस्या सामहार्शयनोचिता ॥ प्राच्यां  
 दिशि समुद्यंतं ददर्शादित्यमंडलं ॥ ४ ॥ तत्र बद्धमनो हृष्टि रभवत्सा सुमध्यमा ॥ न चातप्यतरूपेण भानोः संध्यागतस्य सा ॥ ५ ॥ तस्या हृष्टि रभूद्व्यासापश्यद्दि  
 व्यदर्शनं ॥ आमुक्तकवचं देवं कुंडलाभ्यां विभूषितं ॥ ६ ॥ तस्याः कौतूहलं त्वासीन्मंत्रं प्रति नराधिप ॥ आह्वानमकरोत्साथतस्य देवस्य भाविनी ॥ ७ ॥  
 प्राणानुपस्थस्य तदा त्वा जुहाव दिवाकरं ॥ आजगाम ततो राजंस्त्वरमाणो दिवाकरः ॥ ८ ॥ मधुपिंगो महाबाहुः कंबुग्रीवो हसन्निव ॥ अंगदी बद्धमुकुटो दिशः प्र  
 ज्वालयन्निव ॥ ९ ॥ योगाल्कत्वा द्विधा त्मानमाजगाम ततापच ॥ आबभाषेत तः कुंती साम्ना परमवलगुना ॥ १० ॥ आगतोऽस्मि वशं भद्रे तव मंत्रबलात्कृतः ॥ किं  
 करोमि वशो राज्ञि ब्रूहि कर्ता तदस्मिते ॥ ११ ॥ कुंत्युवाच गम्यतां भगवंस्तत्र यत एवागतोऽहं त्वसि ॥ कौतूहलात्समाहूतः प्रसीद भगवन्निव ॥ १२ ॥  
 सूर्य उवाच गमिष्ये हं यथामा त्वं ब्रवीषितं नु मध्यमे ॥ न तु देवं समहूय न्याय्यं प्रेषयितुं वृथा ॥ १३ ॥ तवाभिसंधिः सुभगे सूर्यापुत्रो भवेदिति ॥ वीर्येणा प्रतिमो  
 लोकैकवची कुंडली ति च ॥ १४ ॥ सा त्वमात्मप्रदानैवैकुरुष्व गजगामिनि ॥ उत्पत्स्यति हि पुत्रस्ते यथा संकल्पमंगने ॥ १५ ॥ अथ गच्छास्यं भद्रे त्वया संगम्य सु  
 स्मिते ॥ यदि त्वं वचनं नाद्य करिष्यसि मम प्रियं ॥ १६ ॥

गते इति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

द्विप्राणि चक्षुः श्रोत्रादीनि उपस्थस्य जलेन सन्ध्यगाचम्येत्यर्थः ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ वशं कामं ॥ ११ ॥ १२ ॥ यथा हंगमिष्येत यामात्रं ब्रवीषि न तु तव योग्यमित्याह नत्विति वया प्रसादमप्राप्य ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥